IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"सरदार पटेल की विरासतः समकालीन भारत में सामाजिक एकता और राष्ट्रीय अखंडता के सन्दर्भ में "

अखिल वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास विभाग
समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुर
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय ,दरभंगा

सारांश

यह शोध–पत्र सरदार वल्लभभाई पटेल की ऐतिहासिक विरासत का समकालीन भारत में सामाजिक एकता और राष्ट्रीय अखंडता के संदर्भ में विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारत के लौह पुरुष के रूप में प्रसिद्ध, पटेल ने स्वतंत्रता के पश्चात 532 रियासतों के एकीकरण के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया। यह अध्ययन पटेल के व्यावहारिक राष्ट्रवाद, प्रशासनिक कौशल और राष्ट्रीय एकता के प्रति दृढ़ संकल्प के मूल सिद्धांतों पर प्रकाश डालता है, जो आज भी क्षेत्रीय असमानताओं, सांप्रदायिक तनाव और सामाजिक–राजनीतिक विखंडन की चुनौतियों से निपटने के लिए प्रासंगिक हैं। अध्ययन राष्ट्रीय प्रतीकवाद में पटेल की बढ़ती केंद्रीयता का विश्लेषण करता है, विशेष रूप से स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के संदर्भ में, और समकालीन राजनीतिक विमर्श में उनकी विरासत के विभिन्न राजनीतिक व्याख्याओं की जांच करता है। शोध का निष्कर्ष है कि पटेल के दर्शन और प्रशासनिक दृष्टिकोण की एक सूक्ष्म समझ भारत के बहुलवादी लोकतंत्र को सुदृढ़ करने और एक समावेशी राष्ट्रीय पहचान को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है, जो मात्र राजनीतिक प्रतीकवाद से परे जाती है।

मुख्य शब्द सरदार वल्लभभाई पटेल, राष्ट्रीय एकीकरण, रियासतों का विलय, व्यावहारिक राष्ट्रवाद, प्रशासनिक एकता, सांप्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय पहचान, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी

परिचय

उपनिवेशवाद के बाद के राज्यों में राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया अक्सर उन प्रतिष्ठित राजनीतिक व्यक्तित्वों के इर्द–गिर्द केंद्रित रही है, जिन्होंने निर्माणकाल के दौरान राष्ट्रीय पहचान को आकार देने में मदद की। भारत में, सरदार वल्लभभाई पटेल एक ऐसे ही व्यक्तित्व के रूप में खड़े हैं, जिनके राष्ट्रीय एकीकरण और प्रशासनिक एकता में योगदान के दीर्घकालिक प्रभाव रहे हैं (गाँधी ,1991)। भारत के प्रथम उप प्रधानमंत्री और गृह मंत्री के रूप में, स्वतंत्रता के बाद 532 रियासतों को भारतीय संघ में एकीकृत करने में पटेल की भूमिका आधुनिक राज्य निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण प्रशासनिक उपलब्धियों में से एक है (मेनन,1956)। सरदार पटेल की विरासत का महत्व समकालीन भारत में और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है, जहां विविधता में एकता की अवधारणा हमारे राष्ट्रीय चरित्र का अभिन्न अंग है। वर्तमान परिदृश्य में जहां विभिन्न प्रकार की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक चुनौतियां मौजूद हैं, पटेल के सिद्धांत और मूल्य हमारे लिए मार्गदर्शक प्रकाश स्तंभ का कार्य करते हैं।

हाल के दशकों में, राष्ट्रीय एकता के प्रति उनके दृष्टिकोण और दृष्टिकोण को राजनीतिक विमर्श, नीति निर्माण और प्रतीकात्मक राष्ट्रीय परियोजनाओं में बढ़ते रूप से उद्धृत किया गया है। विशेष रूप से, गुजरात में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का निर्माण (182 मीटर) दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा भारत के राष्ट्रीय स्तर पर पटेल की उन्नति की भौतिक अभिव्यक्ति को दर्शाती है (जाफरलॉट, 2015)।

सरदार पटेलः ऐतिहासिक संदर्भ और योगदान

प्रारंभिक जीवन और राजनीतिक निर्माण

31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नडियाद में एक साधारण कृषक परिवार में जन्मे वल्लभभाई झावेरभाई पटेल भारतीय राष्ट्रवाद के उन नेताओं में से थे, जिन्होंने विनम्र पृष्ठभूमि से उभरकर स्वतंत्रता आंदोलन की राजनीतिक और प्रशासनिक दिशा को निर्णायक रूप से प्रभावित किया (मेनन, 1956)। युवावस्था में उन्होंने शिक्षा और पेशेवर उन्नति के प्रति अनुशासित दृष्टिकोण अपनाया। इंग्लैंड से कानूनी शिक्षा प्राप्त कर लौटने के बाद अहमदाबाद में उनकी वकालत तेजी से प्रतिष्ठित हुई, जिसने उन्हें सामाजिक–राजनीतिक वास्तविकताओं को व्यावहारिक दृष्टि से समझने में सहायता की।

पटेल की राजनीतिक चेतना के विकास में दो तत्व निर्णायक सिद्ध हुए –पहला, स्थानीय स्तर पर किसानों, श्रमिकों और नगर प्रशासन से जुड़े समस्याओं से उनका प्रत्यक्ष संपर्कय और दूसरा, महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन तथा सत्याग्रह की अवधारणाओं से उनका गहरा परिचय। गांधीजी के साथ उनके निकट संपर्क ने न केवल उनके सार्वजनिक जीवन की दिशा बदली, बल्कि राजनीतिक साधनों के प्रति उनकी सोच को भी गहराई से प्रभावित किया।

1928 का बारदोली सत्याग्रह पटेल के राजनीतिक जीवन का निर्णायक मोड़ था। औपनिवेशिक सरकार द्वारा कर वृद्धि के विरुद्ध किसानों के शांतिपूर्ण प्रतिरोध को पटेल ने असाधारण प्रशासनिक कौशल, अनुशासन और जनसंगठन के साथ नेतृत्व प्रदान किया। इस आंदोलन की सफलता ने ग्रामीण भारत में राष्ट्रवादी राजनीति को नई ऊर्जा प्रदान की और पटेल को ''सरदार'' की सम्मानजनक उपाधि मिलीकृएक ऐसी उपाधि जिसने आगे चलकर उनके नेतृत्व की राष्ट्रीय पहचान को स्थायी रूप से परिभाषित किया (मेनन, 1956)।

पटेल का राष्ट्रवाद अनेक समकालीन नेताओं के वैचारिक राष्ट्रवाद से भिन्न था। उनका राजनीतिक दृष्टिकोण न तो मुख्यतः सिद्धांतनिष्ठ था और न ही अमूर्त आदर्शवाद पर आधारितय बल्कि यह स्थानीय वास्तविकताओं, प्रशासनिक अनुभव और समस्याओं के व्यावहारिक समाधान से निर्मित हुआ था। अहमदाबाद नगरपालिका के अध्यक्ष के रूप में उनके प्रशासनिक अनुभव ने उन्हें यह समझने का अवसर दिया कि शासन व्यवस्था की प्रभावशीलता और नागरिकों का विश्वास परस्पर जुड़ी हुई वास्तविकताएँ हैं।

इसी प्रकार, गांधीजी के नेतृत्व से प्रेरित होकर, उन्होंने सत्याग्रह, अनुशासन, नैतिक दृढ़ता और संगठन क्षमता को राजनीतिक साधनों के रूप में अपनाया। किंतु इन साधनों का उनके भीतर व्याख्यान अत्यंत व्यावहारिक था–वे संघर्ष को सामाजिक सहानुभूति, प्रशासनिक दक्षता और राजनीतिक संकल्प के संतुलन के रूप में देखते थे। यही कारण है कि राष्ट्रीय एकीकरण, रियासतों के विलय, और प्रशासनिक सुधारों जैसे जटिल प्रश्नों पर उनका दृष्टिकोण हमेशा धरातलीय अनुभवों, कानूनी तर्कशक्ति और संगठित राजनीतिक कार्रवाई पर आधारित रहा (अर्गोव, 1969)।

इस प्रकार पटेल का प्रारंभिक जीवन केवल व्यक्तिगत उन्नति की कहानी नहीं, बल्कि उनके राजनीतिक व्यक्तित्व की उस संरचना का आधार था, जिसने स्वतंत्र भारत के राज्य–निर्माण और प्रशासनिक ढांचे को गहराई से प्रभावित किया।

रियासतों का एकीकरण

भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत राष्ट्र–निर्माण की दिशा में सरदार पटेल का योगदान सर्वाधिक निर्णायक और ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है। उप प्रधानमंत्री और गृह मंत्री के रूप में उन्होंने रियासतों के एकीकरण की उस जटिल और अभूतपूर्व प्रक्रिया का नेतृत्व किया, जिसने भारतीय संघ की अखंडता और अस्तित्व को सुनिश्चित किया। 15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश शासन समाप्त होने के साथ ही 562 रियासतों पर ब्रिटिश अधिपत्य भी औपचारिक रूप से समाप्त हो गया, जिससे ये रियासतें सैद्धांतिक रूप से 'स्वतंत्र' हो गईं (कोपलैंड, 1997)। यह स्थिति नवस्वतंत्र भारत के लिए गहन संकट लेकर आई थी, क्योंकि विभिन्न राजप्रमुख अलग–अलग राजनीतिक विकल्प– स्वतंत्र राष्ट्र, पाकिस्तान में विलय या भारत से पृथक् बने रहने पर विचार कर रहे थे। यह संभावित विखंडन भारतीय संघ की राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य स्थिरता के लिए गंभीर चुनौती उत्पन्न कर रहा था।

ऐसे परिस्थितिक संकट में पटेल ने अद्वितीय राजनीतिक संयम, रणनीतिक दृष्टि और कठोर प्रशासनिक कौशल का परिचय दिया। उनके सचिव वी.पी. मेनन की सहायता से उन्होंने राजाओं को समझाने, मनाने, दबाव बनाने और

आवश्यकता पड़ने पर सैन्य विकल्प अपनाने का संतुलित मॉडल विकसित किया। परिणामस्वरूप, केवल दो वर्षों के भीतर 532 रियासतों को भारतीय संघ में सम्मिलित कर लेनाकृइतिहास में अभूतपूर्व उपलब्धि थी (मेनन, 1956)। इस प्रक्रिया में न केवल दीर्घ वार्ताएँ, बल्कि पारस्परिक अविश्वास, क्षेत्रीय संदेह, आर्थिक हितों के समंजन, और परंपरागत राजकीय अधिकारों के प्रश्नों से जूझना भी शामिल था।

रियासतों के एकीकरण की प्रक्रिया ने पटेल के राष्ट्र–निर्माण दृष्टिकोण की जटिलताओं को स्पष्ट किया। उनका तरीका आदर्शवादी नैतिक आग्रह की तुलना में अधिक व्यावहारिक राजनीति पर आधारित था। उन्होंने विविधता को न केवल स्वीकार किया बल्कि उसे प्रशासनिक मॉडल में समाहित किया। पटेल जानते थे कि भारत जैसा बहु–धार्मिक, बहु–भाषिक और बहु–सांस्कृतिक देश केवल सैन्य या कठोर निर्देशों से एकीकृत नहीं रह सकताय उसे संस्थागत व्यवस्था, वैधता और राजनीतिक विश्वास की आवश्यकता है। इसी कारण उन्होंने अधिकांश रियासतों को सम्मानजनक शर्तें प्रदान कीं जैसे प्रिवी पर्स, राजकीय उपाधियाँ, और कुछ प्रतीकात्मक अधिकार ताकि शासकों को नवगठित संघ से अलगाव की भावना न हो और संक्रमणकाल सहज हो सके (कृष्णा, 1994)।

हालाँकि, जहाँ आवश्यक हुआ जैसे हैदराबाद, जूनागढ़ और कश्मीर में पटेल ने दृढ़ता और सैन्य हस्तक्षेप के विकल्पों का भी प्रयोग किया, यह स्पष्ट करते हुए कि राष्ट्रीय अखंडता पर कोई समझौता संभव नहीं है। उनका यह दोहरा दृष्टिकोणकृसम्मानजनक समायोजन और दृढ़ राजनीतिक संकल्प रियासतों के सफल एकीकरण की कुंजी था।

इस प्रकार रियासतों का एकीकरण केवल प्रशासनिक या राजनीतिक कदम नहीं था, बल्कि यह भारतीय राज्य की अवधारणा को परिभाषित करने वाला ऐतिहासिक मोड़ था। पटेल की नेतृत्व क्षमता ने न केवल उपमहाद्वीप की शताब्दियों पुरानी विघटित राजनीतिक संरचना को एक नए संघीय ढांचे में रूपांतरित किया, बल्कि एक एकीकृत, स्थिर और सशक्त भारतीय गणराज्य की बुनियाद भी रखी। समकालीन भारतीय संघीय व्यवस्था, केंद्र –राज्य संबंध, और प्रशासनिक एकरूपता में आज भी पटेल के इस योगदान की प्रतिध्वनि स्पष्ट रूप से सुनाई देती है।

प्रशासनिक सुधार और शासन दृष्टि

क्षेत्रीय एकीकरण की ऐतिहासिक परियोजना से आगे बढ़कर, पटेल ने स्वतंत्र भारत के प्रशासनिक ढांचे को आकार देने में महत्वपूर्ण और दीर्घकालिक योगदान दिया। उनकी दूरदर्शिता का केंद्रीय तत्व एक ऐसी मजबूत, पेशेवर और एकीकृत सिविल सेवा की स्थापना था, जो राजनीतिक सत्ता बदलने के बावजूद प्रशासनिक निरंतरता और निष्पक्षता सुनिश्चित कर सके। भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) तथा अन्य अखिल भारतीय सेवाओं की स्थापना में उनकी निर्णायक भूमिका ने न केवल राष्ट्रव्यापी प्रशासनिक व्यवस्था को स्थिरता प्रदान की, बल्कि संघीय ढांचे के भीतर केंद्र और राज्यों के बीच प्रभावी समन्वय का आधार भी निर्मित किया (पॉटर, 1996)।

1947 में सिविल सेवा परिवीक्षाधीनों को दिए गए अपने ऐतिहासिक संबोधन में पटेल ने उन्हें भारत के शासन तंत्र का "स्टील फ्रेम" कहा। इस भाषण में उन्होंने यह स्पष्ट किया कि राष्ट्रीय एकता, प्रशासनिक दक्षता और शासन की विश्वसनीयता तभी संभव है जब नौकरशाही राजनीतिक दबावों से मुक्त रहकर निष्पक्षता, व्यावसायिकता और कर्तव्यनिष्ठा के सिद्धांतों पर कार्य करे (गांधी, 1991)। यह विचार उस समय विशेष रूप से महत्वपूर्ण था, जब नवस्वतंत्र राष्ट्र विभाजन, विस्थापन, आर्थिक अस्थिरता और रियासतों के राजनीतिक एकीकरण जैसी अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा था।

पटेल के शासन दर्शन में वैचारिक कठोरता की तुलना में व्यावहारिक समाधान को अधिक महत्त्व दिया गया। वे शासन को किसी एक राजनीतिक विचारधारा के प्रयोगशाला–तर्क की तरह नहीं देखते थे, बल्कि उसे सामाजिक वास्तविकताओं, प्रशासनिक सीमाओं और राष्ट्रीय सुरक्षा की आवश्यकताओं के संदर्भ में परिभाषित करते थे। इसी कारण वे लोकलुभावन निर्णयों की बजाय दीर्घकालिक संस्थागत मजबूती, दक्ष नौकरशाही, और नीतिगत स्थिरता पर जोर देते रहे।

उनका यह दृष्टिकोण शरणार्थियों के व्यापक पुनर्वास, हैदराबाद और जूनागढ़ जैसी रियासतों के एकीकरण, सीमा सुरक्षा की पुनव्यवस्था, और सिविल सेवा सुधारों जैसे जटिल मुद्दों के प्रति उनके निर्णयों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। पटेल ने प्रशासन को केवल तकनीकी तंत्र नहीं, बल्कि राज्य निर्मिति का नैतिक व संस्थागत आधार मानाकृ एक ऐसा आधार जो विविधतापूर्ण भारतीय समाज को एकीकृत रखने और लोकतांत्रिक व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करने में अपरिहार्य था।

समकालीन भारत में शासन सुधारोंकृजैसे डिजिटल प्रशासन, पारदर्शिता तंत्र, सेवा–प्रदान की गति में वृद्धि, और केंद्र राज्य समन्वय की नई संरचनाओंकृमें आज भी पटेल की प्रशासनिक दृष्टि प्रतिध्वनित होती है। उनकी यह मान्यता कि एक सक्षम, ईमानदार और समन्वित नौकरशाही ही राष्ट्रीय एकीकरण और प्रभावी लोकतांत्रिक शासन का वास्तविक आधार है, आज के नीति–निर्माण के लिए भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी 1947 में थी।

समकालीन राजनीतिक विमर्श में पटेल की विरासत

समकालीन भारत में, पटेल की विरासत राजनीतिक विमर्श में एक विवादित प्रतीकात्मक मुद्दा बन गई है। ऐतिहासिक रूप से कांग्रेस पार्टी से जुड़े होने के बावजूद, हाल के दशकों में भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) और उसके वैचारिक सहयोगियों द्वारा उनका बढ़ता उपयोग देखा गया है। (गुहा, 2007)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार के तहत स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का निर्माण इस प्रतीकात्मक उपयोगिता की सबसे स्पष्ट अभिव्यक्ति है (जाफरलॉट, 2015)।

पटेल की विरासत से जुड़ा विवाद अनेक पहलुओं पर केंद्रित रहा है जैसे कि जवाहरलाल नेहरू के साथ उनके संबंध, धार्मिक अल्पसंख्यकों के प्रति उनका दृष्टिकोण, कश्मीर पर उनकी नीति, और केंद्र–राज्य संबंधों को लेकर उनकी सोच। विभिन्न राजनीतिक नेता पटेल के विचारों और कार्यों के उन पहलुओं को चुनिंदा रूप से उजागर करते हैं, जो उनके वर्तमान राजनीतिक एजेंडे के अनुकूल होते हैं (रॉय, 2007)। यह राजनीतिक विवाद भारत की राष्ट्रीय पहचान, इसके स्थापना सिद्धांतों, और एकता और विविधता के बीच उचित संतुलन के बारे में व्यापक बहस को दर्शाता है। पटेल की विरासत का उल्लेख करके, समकालीन राजनीतिक नेता संघवाद से लेकर अल्पसंख्यक अधिकारों और राष्ट्रीय सुरक्षा तक के मुद्दों पर अपने पदों के लिए ऐतिहासिक वैधता की तलाश करते हैं।

गुजरात में 2018 में उद्घाटित 182 मीटर ऊंची स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, पटेल की विरासत का सबसे महत्वपूर्ण भौतिक स्मारक है (जाफरलॉट, 2015)। अपने प्रभावशाली आयामों के अलावा, मूर्ति समकालीन भारत की राष्ट्रीय पहचान के निर्माण में जटिल प्रतीकात्मक अर्थ प्रदर्शित करती है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में परिकल्पित और क्रियान्वित की गई परियोजना के रूप में, यह प्रतिमा भारत के राष्ट्रवादी नेताओं में पटेल के उत्थान को दर्शाती है। आधिकारिक तौर पर राष्ट्रीय एकता के लिए एक श्रद्धांजलि के रूप में तैयार की गई इस परियोजना की विभिन्न रूप से व्याख्या की गई है, जिसमें वैकल्पिक राष्ट्रवादी प्रतीकवाद बनाने, गैर–कांग्रेसी राजनीतिक परंपराओं के लिए पटेल की विरासत का दावा करने और राष्ट्रीय पहचान में गुजरात के महत्व को पेश करने का प्रयास शामिल है। (रॉय, 2007)। जनजातीय बहुल नर्मदा जिले में प्रतिमा की स्थापना, सार्वजनिक–निजी भागीदारी मॉडल के माध्यम से इसके वित्तपोषण और एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण के रूप में इसकी स्थिति सामूहिक रूप से भारत में विकास, सांस्कृतिक प्रतीकवाद और विरासत प्रबंधन के समकालीन प्रतिमानों को दर्शाती है। ये तत्व राष्ट्रवादी आख्यानों और बाजार–संचालित उद्देश्यों के साथ बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के बढ़ते एकीकरण को दर्शाते हैं (सिंह और सक्सेना , 2011)। हालाँकि जनजातीय समुदायों का एक साथ विस्थापन और राष्ट्रीय एकता के स्मारक के रूप में परियोजना का निर्माण भारत की विकास कथा में अंतर्निहित विरोधाभासों को समाहित करता है, जिसमें राष्ट्रीय प्रगति की खोज अक्सर हाशिए पर रहने वाली आबादी के अधिकारों और आवाजों की अनदेखी करती है।

सामाजिक सामंजस्य और एकीकरणः समकालीन संदर्भ में पटेल के सिद्धांत

प्रशासनिक एकता और शासन

पटेल की प्रशासनिक दृष्टि में निहित एक मजबूत, उत्तरदायी और एकीकृत नौकरशाही व्यवस्था आज के भारत की शासन–प्रणाली में गहराई से प्रतिध्वनित होती है। अखिल भारतीय सेवाओंकृविशेषकर भारतीय प्रशासनिक सेवाकृकी स्थापना और सुदृढ़ीकरण के लिए उनके द्वारा की गई मुखर वकालत ने न केवल नवस्वाधीन भारत के राज्य तंत्र को स्थिरता प्रदान की, बल्कि देश के विविध, बहुभाषी और अर्ध–विकेंद्रीकृत संघीय ढांचे में प्रभावी समन्वय को भी सुनिश्चित किया (पॉटर, 1996)।

समकालीन प्रशासनिक सुधारकृजैसे केंद्रदृराज्य समन्वय को सुदृढ़ बनाना, नौकरशाही प्रक्रियाओं का सरलीकरण, डिजिटल शासन का विस्तार, और सेवा–प्रदान तंत्र की दक्षता में वृद्धिकृअक्सर पटेल के प्रशासनिक दक्षता, केंद्रीकृत निगरानी, और राष्ट्रीय एकता के सिद्धांतों से प्रेरणा लेते दिखाई देते हैं (पटेल, 1998)। इन सुधारों का मूल उद्देश्य प्रशासन को न केवल अधिक जवाबदेह बनाना है, बल्कि उसे उन ऐतिहासिक असमानताओं और क्षेत्रीय विविधताओं के अनुरूप ढालना भी है जो भारतीय संघ के भीतर विद्यमान हैं।

एकीकरण प्रक्रिया के दौरान पटेल ने केंद्रीय अधिकार और प्रांतों की स्वायत्तता के बीच उत्पन्न होने वाले तनाव को जिस व्यवहारिकता, संवाद और रणनीतिक लचीलापन से संतुलित किया, वह आज की संघीय राजनीति में भी अत्यंत प्रासंगिक है। संघवाद के प्रति उनका यह संतुलित दृष्टिकोणकृजिसमें क्षेत्रीय विशिष्टताओं का सम्मान करते हुए एक सुदृढ़ केंद्रीय प्राधिकरण को भी आवश्यक माना गयाकृअधिकार क्षेत्र, संसाधन वितरण, और नीति–कार्यान्वयन से जुड़े समकालीन केंद्र राज्य विवादों को समझने और सुलझाने के लिए महत्वपूर्ण वैचारिक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

क्षेत्रीय असमानताओं और अलगाववादी प्रवृत्तियों का समाधान

पटेल का क्षेत्रीय एकीकरण दृष्टिकोण क्षेत्रीय स्वायत्तता और सांस्कृतिक अधिकारों के प्रति लचीलेपन के साथ–साथ राष्ट्र की क्षेत्रीय अखंडता पर दृढ़ता का संतुलित संयोजन प्रस्तुत करता है। यह संतुलनपूर्वक निर्मित दृष्टि पूर्वोत्तर भारत और जम्मू–कश्मीर जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में उभरने वाली अलगाववादी प्रवृत्तियों के समाधान में आज भी विचारणीय और प्रासंगिक साबित होती है (राघवन, 2010)।

राष्ट्रीय एकता को केवल राजनीतिक अधिष्ठान के रूप में न देखकर, पटेल ने इसे सामाजिक–आर्थिक समानता और प्रशासनिक सामंजस्य के माध्यम से प्राप्त होने वाला स्थायी लक्ष्य माना। उनका यह विश्वास कि आर्थिक समरसता और कुशल प्रशासनिक एकरूपता भावनात्मक एकता को सुदृढ़ करेगी, समकालीन नीति–निर्माण में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। वर्तमान शासन–पहलें विशेषकर उन क्षेत्रों में जो ऐतिहासिक रूप से विकास से वंचित रहे हैंकृ समावेशी विकास, अवसंरचनात्मक निवेश, और सांस्कृतिक–सामाजिक सशक्तीकरण को प्राथमिकता देकर पटेल की इसी वैचारिक परंपरा को आगे बढ़ाती हैं।

धार्मिक सद्भाव और अल्पसंख्यक एकीकरण

सांप्रदायिक सद्भाव, धार्मिक विविधता और अल्पसंख्यक सुरक्षा के प्रश्न पर सरदार पटेल की दृष्टि आधुनिक भारत के बहुलवादी लोकतांत्रिक ढांचे के लिए गहन ऐतिहासिक और वैचारिक अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। विभाजन के पश्चात उत्पन्न अभूतपूर्व सांप्रदायिक हिंसा, विस्थापन और सुरक्षा–संबंधी चुनौतियों के बीच पटेल का नेतृत्व दृढ़ता और व्यावहारिकता का संगम था। धार्मिक अलगाववाद की उनकी स्पष्ट अस्वीकृतिकृजो विभाजन के राजनीतिक और सामाजिक परिणामों से गहरे रूप में प्रभावित थीकृने राज्य की एकता और स्थिरता को सर्वोपरि मानने वाले उनके राष्ट्रवादी दृष्टिकोण को सुदृढ़ किया। फिर भी, यह उल्लेखनीय है कि पटेल ने इस दृढ़ रुख को अल्पसंख्यकों के संवैधानिक अधिकारों, कानून के समक्ष समानता और धर्म से इतर नागरिकता की अवधारणा के साथ संतुलित करने का निरंतर प्रयास किया (गांधी, 1991)। यह संतुलन उनके राज्य–निर्माण दृष्टिकोण की केंद्रीय पहचान थी।

पटेल की सोच में धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता भारतीय समाज की वास्तविकता थी, और इसे नजरअंदाज करने के बजाय राजनीतिक संरचना में समाहित किया जाना आवश्यक था। उनका मानना था कि एक समावेशी राष्ट्र की स्थिरता केवल राजनीतिक अधीनता पर नहीं, बल्कि सामाजिक विश्वास, सुरक्षा की भावना, और संस्थागत न्याय पर टिकती है। इसलिए, उन्होंने प्रशासनिक रूप से एकीकृत राज्य की दिशा में कार्य करते हुए भी मुस्लिम, सिख और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों की सुरक्षा, पुनर्वास, और गरिमापूर्ण नागरिक स्थिति सुनिश्चित करने के लिए नीतिगत स्तर पर संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाया। विभाजनोत्तर दिल्ली, पंजाब और हैदराबाद में उनके निर्देश इसी दृष्टिकोण का प्रतीक हैं, जहाँ उन्होंने बहुसंख्यक प्रतिशोध की प्रवृत्तियों को नियंत्रित करने, धार्मिक स्थलों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और नागरिक अधिकारों की पुनर्स्थापना पर विशेष बल दिया।

पटेल का व्यावहारिक राष्ट्रवाद एक ऐसा ढांचा प्रस्तुत करता है जो आज भी प्रासंगिक हैकृविशेष रूप से तब जब पहचान–आधारित राजनीति, धार्मिक ध्रुवीकरण और सांप्रदायिक तनावों की घटनाएँ समकालीन भारत की राजनीतिक–सामाजिक संरचना को चुनौती देती हैं। उनका मॉडल इस विचार पर आधारित था कि क्षेत्रीय अखंडता को बनाए रखते हुए सांस्कृतिक स्वायत्तता और धार्मिक अभिव्यक्ति के लिए संस्थागत स्थान प्रदान किया जाए। यह दृष्टिकोण मौजूदा बहसों–जैसे व्यक्तिगत बनाम सामूहिक अधिकार, बहुसंख्यकवाद बनाम बहुलवाद, और राष्ट्रीय सुरक्षा बनाम अल्पसंख्यक अधिकार को अधिक संतुलित और सूक्ष्म रूप में समझने का अवसर प्रदान करता है।

हालाँकि, समय के साथ पटेल की विरासत का राजनीतिक उपयोग और उसकी चयनात्मक व्याख्या कई बार उनके मूल दृष्टिकोण की जटिलताओं को धुंधला कर देती है। कुछ राजनीतिक समूह उनके दृढ़ राष्ट्रवाद को केंद्र में रखते हैं, जबकि अन्य उनकी बहुलवादी संवेदनशीलता को रेखांकित करते हैं। इस प्रकार, उनकी विरासत का एकांगी चित्रण न केवल ऐतिहासिक सत्य को सीमित करता है, बल्कि यह उस संतुलनकृराष्ट्रीय एकता और सामाजिक

विविधता के सह–अस्तित्वकृको भी कमजोर करता है, जिसे पटेल ने अपने राजनीतिक और प्रशासनिक जीवन में साधने का प्रयास किया था (गुहा, 2007)।

समग्र रूप से, पटेल की धार्मिक सद्भाव संबंधी दृष्टि आधुनिक भारत के लिए एक व्यावहारिक, बहुपरत और संतुलित ढांचा प्रस्तुत करती है, जो न केवल बहुलवादी लोकतंत्र की रक्षा के लिए आवश्यक है, बल्कि विविधता में निहित सामूहिक शक्ति को भी पहचानने और संरक्षित करने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करती है।

निष्कर्ष

सरदार वल्लभभाई पटेल की विरासत आधुनिक भारत के निर्माण में अमूल्य है। उनका दृढ़ संकल्प, कुशल नेतृत्व और दूरदर्शिता ने न केवल भारत के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बल्कि एक ऐसी नींव रखी जिस पर समकालीन भारत का विशाल और विविधतापूर्ण ढांचा खड़ा है। आज के समय में जब भारत विविध चुनौतियों का सामना कर रहा है, सरदार पटेल के आदर्श और सिद्धांत अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। उनका 'एकता में अनेकता' का दर्शन राष्ट्रीय एकीकरण का मार्गदर्शन करता है, जहां हमारी सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित करते हुए राष्ट्रीय अखंडता को सर्वोपरि रखा जाता है। पटेल के द्वारा स्थापित प्रशासनिक संरचनाएं और सिविल सेवाएं आज भी देश के शासन का आधार हैं। उनके द्वारा किए गए रियासतों के एकीकरण के कार्य ने न केवल भौगोलिक एकता सुनिश्चित की, बल्कि सामाजिक एकता का भी मार्ग प्रशस्त किया।

समकालीन भारत में, क्षेत्रीयता, जातिवाद और सांप्रदायिकता जैसी चुनौतियों के बीच, पटेल के विचार हमें याद दिलाते हैं कि राष्ट्रहित सर्वोपरि है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि मजबूत राष्ट्र के निर्माण के लिए दृढ़ निर्णय क्षमता, प्रशासनिक कुशलता, और सामाजिक समरसता आवश्यक है। निःसंदेह, सरदार पटेल की विरासत केवल ऐतिहासिक नहीं, बल्कि भविष्योन्मुखी भी है। उनके विचार और आदर्श आज के भारत को एक संघीय, लोकतांत्रिक और समावेशी राष्ट्र के रूप में विकसित होने में मार्गदर्शन करते हैं। लौह पुरुष की इस अमूल्य विरासत को संजोना और आगे बढ़ाना हमारा सामूहिक दायित्व है, जिससे सामाजिक एकता और राष्ट्रीय अखंडता के सपने को साकार किया जा सके।

References

1. Argov, Daniel. 1969. *Moderates and Extremists in the Indian National Movement, 1883-1920: With Special Reference to Surendranath Banerjea and Lajpat Rai*. Bombay: Asia Publishing House.
2. Copland, Ian. 1997. *The Princes of India in the Endgame of Empire, 1917-1947*. Cambridge: Cambridge University Press.
3. Gandhi, Rajmohan. 1991. *Patel: A Life*. Ahmedabad: Navajivan Publishing House.
4. Guha, Ramachandra. 2007. *India After Gandhi: The History of the World's Largest Democracy*. London: Macmillan.
5. Jaffrelot, Christophe. 2015. "The Modi-centric BJP 2014 Election Campaign: New Techniques and Old Tactics." *Contemporary South Asia* 23(2): 151-166.
6. Krishna, Sankaran. 1994. "Cartographic Anxiety: Mapping the Body Politic in India." *Alternatives: Global, Local, Political* 19(4): 507-521.
7. Menon, V.P. 1956. *The Story of the Integration of the Indian States*. New York: Macmillan.
8. Patel, I.G. 1998. "New Economic Policies: A Historical Perspective." *Economic and Political Weekly* 33(4): 2-15.
9. Potter, David C. 1996. *India's Political Administrators, 1919-1983*. Oxford: Clarendon Press.
10. Raghavan, Srinath. 2010. *War and Peace in Modern India*. London: Palgrave Macmillan.
11. Roy, Srirupa. 2007. *Beyond Belief: India and the Politics of Postcolonial Nationalism*. Durham: Duke University Press.
12. Sherman, Taylor C. 2007. "The Integration of the Princely State of Hyderabad and the Making of Postcolonial India, 1948-56." *Indian Economic and Social History Review* 44(4): 489-516.
13. Singh, M.P., and Rekha Saxena. 2011. *Indian Politics: Contemporary Issues and Concerns*. New Delhi: Prentice-Hall of India.